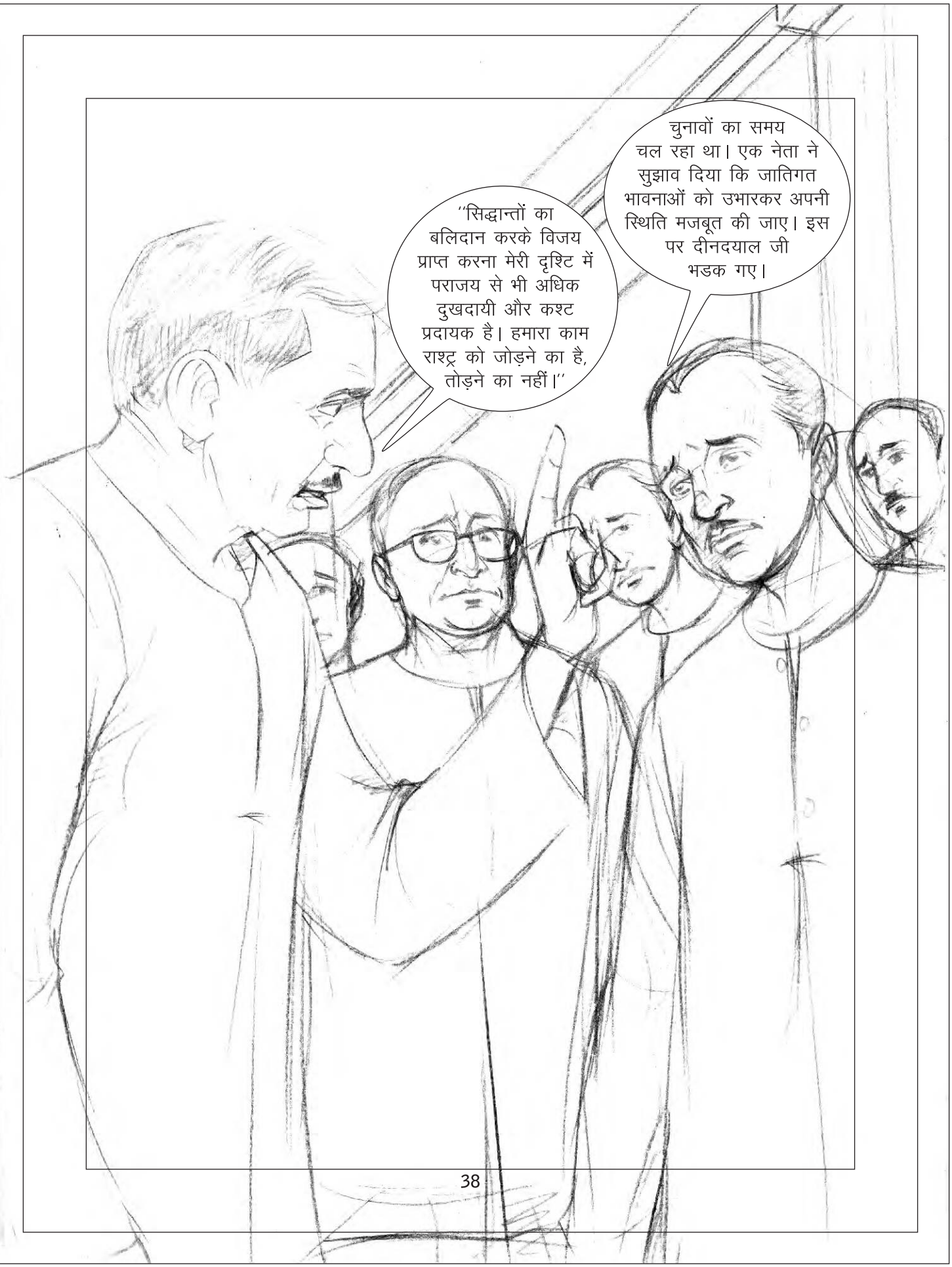
चुनावों का समय चल रहा था। एक नेता ने सुझाव दिया कि जातिगत भावनाओं को उभारकर अपनी स्थिति मजबूत की जाए। इस पर दीनदयाल जी भडक गए।
''सिद्धान्तों का बलिदान करके विजय प्राप्त करना मेरी दृश्टि में पराजय से भी अधिक दुखदायी और कश्ट प्रदायक है। हमारा काम राश्ट्र को जोड़ने का है, तोड़ने का नहीं।''